



# राजस्थान—पटवार

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड

भारत का इतिहास एवं संस्कृति

विषय सूची  
प्राचीन इतिहास

1. सिन्धुघाटी सभ्यता	1
2. वैदिक काल	10
3. ऋग्वैदिक काल	15
4. उत्तरवैदिक काल	19
5. बौद्ध धर्म	21
6. जैन धर्म	27
7. भागवत धर्म, शैव धर्म, शाक्त धर्म	33
8. 16 महाजनपद काल	35
9. विदेशी आक्रमण	39
10. मौर्य वंश	41
11. मौर्योत्तर काल	54
12. गुप्त वंश	61
13. मंदिर स्थापत्य कला	87

मध्यकालीन इतिहास

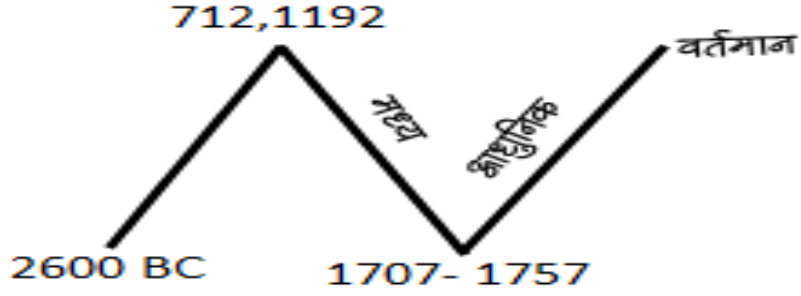
1. इस्लाम	89
2. तुर्क आक्रमण	90

3. मोहम्मद गौरी	92
4. भारत पर अरब आक्रमण	93
5. सल्तनत काल	94
6. मुगलकाल	118
7. विजयनगर साम्राज्य	150
8. बहमनी साम्राज्य	156
9. शूफीवाद	158
10. भक्ति आन्दोलन	163
11. ऋषि आन्दोलन	165
12. शिख धर्म	166
13. मराठा	170

### आधुनिक इतिहास

1. भारत में यूरोपीयन शक्तियों का आगमन	172
2. उत्तरकालीन मुगल सम्राट	180
3. बंगाल	184
4. मराठा शक्ति का उत्कर्ष	187
5. लॉर्ड वेल्लेजली की सहायक संधि	196
6. अंग्रेजों की भू-राजस्व पद्धतियाँ	197

7. अंग्रेजों के न्यायिक सुधार	199
8. भारत में लोक सेवा का विकास	200
9. मैसूर	201
10. पंजाब	203
11. गवर्नर जनरल	207
12. भारत के गवर्नर जनरल	211
13. भारत के वायसराय	217
14. 1857 की क्रांति	225
15. सामाजिक व धार्मिक सुधार आन्दोलन	232
16. राष्ट्रीय आंदोलन	240
17. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	242
18. 1909 का भारत परिषद् अधिनियम/मार्ले मिंटो सुधार	247
19. गांधी युग	249
20. 1919 का भारत सरकार अधिनियम /मोण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार	252
21. भारत सरकार अधिनियम 1935	260
22. भारत में क्रांतिकारी आंदोलन	267
23. विदेशों में क्रांतिकारी आंदोलन	269
24. प्रमुख व्यक्तित्व	272
25. भारत का शैक्षणिक विकास	274



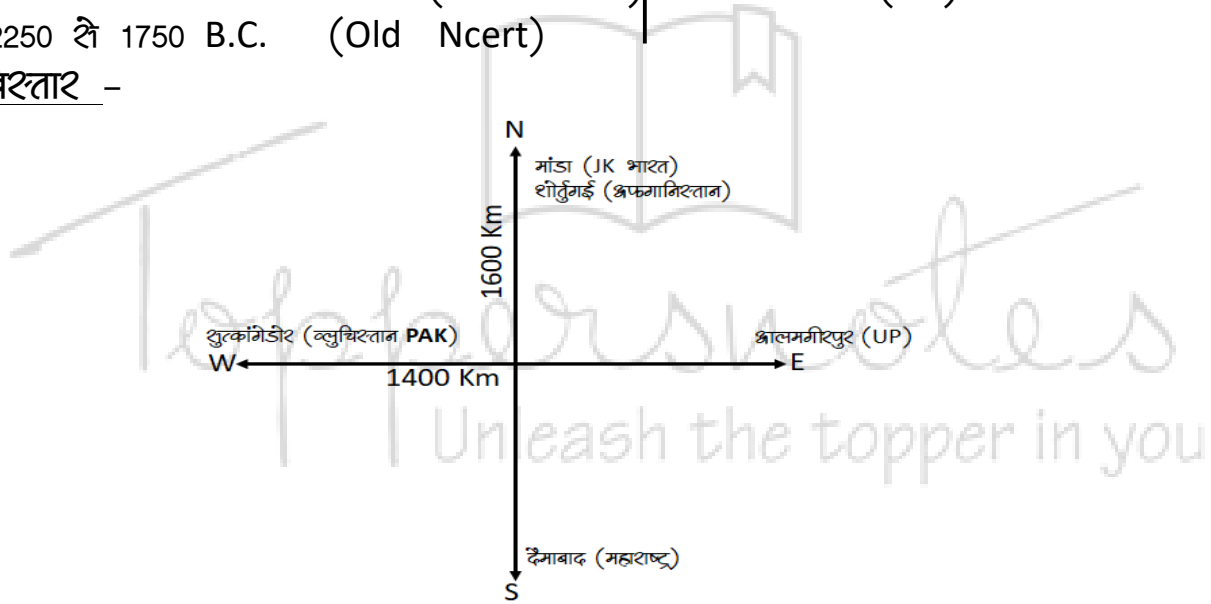
**कालक्रम**

1. 2600	BC - 1900 BC	सिन्धुघाटी सभ्यता
2. 1900	BC - 1500 BC	-----
3. 1500	BC - 1000 BC	ऋग्वेदिक काल
4. 1000	BC - 600 BC	उत्तरवेदिक काल
5. 600	BC - 321 BC	महाजनपद काल (बौद्ध, जैन)
6. 321	BC - 184 BC	मौर्य काल
7. 184	BC - 321 AD	मौर्योत्तर काल
8. 319	AD - 550 AD	गुप्तकाल
9. 606	AD - 647 AD	हर्षवर्द्धन
10. 750	AD - 1000 AD	राजपूत काल
11. 1192 (1206)	- 1526 AD	सल्तनत काल
12. 1526	AD - 1707 (1858)	मुगल काल
13. 1707 (1757)	- वर्तमान	आधुनिक काल

# प्राचीन काल में भारत

## सिन्धु घाटी सभ्यता

- इसे "हडप्पा सभ्यता" भी कहा जाता है ।
- यह कांस्ययुगीन सभ्यता थी ।
- यह विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है । उत्कृष्ट नगर व्यवस्था एवं जल निकासी व्यवस्था इसको विशिष्ट बनाती है ।
- चार्ल्स मेशन - 1826 ई. सबसे पहले सभ्यता की ओर ध्यान आकर्षित किया ।
- जॉन बर्टन व विलियम बर्टन - 1856 ई हडप्पा नगर का खोज किया ।
- सर जॉन मार्शल (ASI - महानिदेशक) - 1921 ई पूर्व  
इन्होंने दयाशम शाहनी को हडप्पा में उत्खनन करने के लिए नियुक्त किया ।
- कालक्रम - 2600 से 1900 B.C. (New Ncert) | रेडियो कार्बन (C<sup>14</sup>)  
2250 से 1750 B.C. (Old Ncert)
- विस्तार -



- पिग्मट ने हडप्पा एवं मोहनजोदड़ो को सिन्धु सभ्यता की जुँडवा राजधानी बताया है ।
- धोलावीरा एवं राखीगढ़ी भारत में सबसे पुरातन स्थल है ।
- आजादी के समय अधिकांश पुरास्थल पाकिस्तान में चले गये ।
- बड़े नगर (पाकिस्तान)  
मनेडीवाल  
हडप्पा  
मोहनजोदड़ो

## नगर नियोजन -

- उत्कृष्ट नगर व्यवस्था  
शिल्पु घाटी के समकालीन सभ्यताओं में इस विशेषता का अभाव ।
- नगर ग्रिड पद्धति पर आधारित थे अर्थात् शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरों को बनाया था । सभी मार्ग समकोण पर काटते थे ।
- सबसे चौड़ी सड़क 34 फिट की मिलती है जो सम्भवतः राजमार्ग रहा होगा ।
- घरे में उत्कृष्ट नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बड़ी नालियों को ढक कर रखते थे ।
- भवन के अन्दर सामान्यतः 3 या 4 कक्ष, स्तोईघर, 1 विद्यालय स्नानागार एवं कुशां होता था ।
- कालीबंगा से अलंकृत ईंटें प्राप्त होती हैं ।  
कच्ची एवं पक्की ईंटों का प्रयोग करते थे ।  
ईंट का आकार - 1 : 2 : 4
- कालीबंगा से लकड़ी की नालियों के शक्य मिलते हैं ।
- नगर 2 भागों में बाँटा हुआ होता था । पहला भाग - दुर्गिकृत होता था (शासक वर्ग)  
तथा दूसरा भाग सामान्य । (मजदूर, कारीगर, व्यापारी आदि)
- राजनीतिक व्यवस्था: -  
ज्यादा जानकारी नहीं है । सम्भवतया पुरोहित राजा (Prist King) या व्यापारी वर्ग के हाथ में शासन व्यवस्था रही होगी पिग्मट ने ----- जुडवा राजधानी ---- ।
- आर्थिक व्यवस्था -  
कृषि
- खेती व्यवस्था - प्रमुख कार्य
- कालीबंगा से जुते हुए खेतों के शक्य मिले हैं ।  
एक साथ दो - दो फसल बोने के शक्य मिले हैं (कालीबंगा)
- गेहूँ मटर, जौ, तिल, मोटा अनाज (ज्वार), रागी का प्रयोग करते थे ।
- उत्तर हडप्पा काल में चावल के शक्य भी मिलते हैं । लोथल से चावल के दाने एवं रंगपुर से चावल की भूसी मिली है ।
- सिंचाई (कुँओ एवं) नदियों के माध्यम से होती थी ।
- नहरों के शक्य भी मिलते हैं - शौर्तुगई (AF) (OXUS नदी के किनारे स्थित)
- धौलावीरा से कृत्रिम जलाशय के शक्य मिले हैं । सम्भवतः नहरों के माध्यम से सिंचाई करते थे ।
- अधिशेष उत्पादन (Surplus Production) होता था । हडप्पा तथा मोहनजोदड़ो से विशाल अनागार के शक्य मिलते हैं

## पशुपालन

- बैल, भैंस, बकरी, भेड, खरगोश, कुत्ता आदि पालतु पशु थे।
- मोहरों पर कूबड वाले बैल का श्रंखन बहुत अधिक मिलता है।
- घोड़े एवं ऊँट से ज्यादा परिचित नहीं थे। सुक्रोटडा से घोड़े की श्रिथियाँ मिलती हैं।

## उद्योग

- चुम्बुद्धों एवं लोथल से मनके बनाने का कारखाना मिलता है।
- चाक पर बर्तन बनाने का कार्य होता था।
- बर्तनों को आग से पकाते भी थे।
- भट्टे के शाक्ष्य भी मिलते हैं। कच्ची व पक्की ईंटों का प्रयोग होता था।
- लकड़ी के कारखाने भी थे।
- शोना, चाँदी, ताँबा, टिन आदि से परिचित थे। (ताँबा + टिन = कांश्य)
- बहुमूल्य पत्थर "कार्नेलियोन" का प्रयोग भी करते थे।

## धार्मिक स्थिति - (धार्मिक जीवन)

- बहुदेववाद में विश्वास रखते थे।
- मूर्तिपूजा करते थे।
- मन्दिरों के शाक्ष्य नहीं मिलते।
- अग्निकुण्ड प्राप्त होते हैं।
- मातृदेवियों की मूर्तियाँ मिलती हैं।
- पशुपतिनाथ की मोहर प्राप्त होती है। इस मोहर पर बाघ, हाथी, बैल, गैंडा व हिरण के चित्र मिलते हैं सर जॉन मार्शल ने सर्वप्रथम इसे पशुपतिनाथ कहा था।
- आत्मा की श्रमरता में विश्वास रखते थे।
- हडप्पा से श्वास्तिक का चिह्न प्राप्त होता है।
- लिंगपूजा, यौनिपूजा, वृक्ष पूजा में विश्वास रखते थे।
- बलि प्रथा का अनुमान भी - जैसे - चुम्बुद्धों की मुहर पर बलि के दृश्य
- वृक्ष, पशु, साँप, पक्षी आदि की भी पूजा, सूर्य पूजा
- पुनर्जन्म में विश्वास - 3 तरह के दाह संस्कार
- हडप्पा से एक मृण्मूर्ति के गर्भ से एक पौधा निकला दिखाया गया है, जो उर्वरता की देवी का प्रतीक है

## सामाजिक स्थिति: -

- मातृसत्तात्मक संयुक्त परिवार होते थे।
- समाज संभवतः 4 भागों में विभाजित था -
  - (i) पुरोहित वर्ग
  - (ii) व्यापारी वर्ग
  - (iii) किसान वर्ग
  - (iv) श्रमिक वर्ग
- बड़ी मात्रा में मातृदेवियों की मूर्ति मिलती है।



- यह शान्तिप्रिय लोग थे क्योंकि अत्यन्त कम मात्रा में हथियार मिलते हैं।
- पुरुष एवं महिलाएँ शृंगार करते थे एवं जवाहरात पहनते थे।
- लोग शाकाहारी व माँसाहारी थे।
- शतरंज एवं मुर्गे की लडाईं इनके प्रिय खेल थे।
- अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों का प्रचलन था -
  - (i) पूर्ण शवाधान
  - (ii) आंशिक शवाधान
  - (iii) दाह संस्कार
- यह आत्मा व पुनर्जन्म में विश्वास करते थे।
- लोथल से 3 व कालीबंगा से एक युग्मित शवाधान मिलता है।

### आर्थिक स्थिति/व्यापार: -

- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था थी।
- अधिशेष उत्पादन होता था जिन्हे बड़े बाजारों/शहरों में बेचा जाता था।
- गेहूँ, शरदों, चना, मटर, रागी प्रमुख फसलें थी।
- इन्हें चावल एवं बाजरे का ज्ञान नहीं था।
- लोथल से चावल के साक्ष्य मिलते हैं।
- रंगपुर से चावल की भूसी मिलती है।
- रंगपुर उत्तर हडप्पा स्थल है।
- शोर्तुगई (अफ़गानिस्तान) Oxus River के किनारे से नहरों के साक्ष्य मिलते हैं।
- धौलावीरा से जलाशय के साक्ष्य मिलते हैं।
- यह पशुपालन भी करते थे।
- गाय, भैंस, भेड़, बकरी, खरगोश, कुत्ता एवं बिल्ली इनके प्रिय पशु थे।
- यह ऊँट, घोड़ा, हाथी से परिचित नहीं थे।
- विदेशी व्यापार होता था।
- शारंगोन अभिलेख में सिन्धु घाटी सभ्यता को "मेलुहा" कहा गया है।
- मेलुहा हाजा (मोर) पक्षी के लिए प्रसिद्ध है।
- शारंगोन अभिलेख में कपास को सिण्डन कहा गया है।
- कपास की विश्व में प्रथम खेती भारत में हुई।
- दिलमून (बहरीन) व आखन (ओमान) मध्यस्थ का कार्य करते थे।
- मुद्रा व्यवस्था का प्रचलन नहीं था।
- वस्तु विनिमय होता था।
- यह सोने व चाँदी का प्रयोग करते थे।
- लोहे से परिचित नहीं थे।
- ताँबा + टिन = कांस्य
- बालाकोट (PAK) से शंख उद्योग के अवशेष मिलते हैं।
- माप की दशमलव प्रणाली
- भारत को नाविकों का देश कहा

## मूर्तियों एवं मुहरे: -

- यहाँ से 3 तरह की मूर्तियाँ मिलती हैं -
  1. धातु की
  2. पत्थर की
  3. मिट्टी की (टेशकोटा)
- मोहनजोदड़ो से नर्तकी की मूर्ति (धातु की)
- दैमाबाद से धातु का स्थ
- मोहनजोदड़ो से पत्थर की पुरोहित राजा की मूर्ति
- टेशकोटा की मातृदेवियों की मूर्तियाँ
- ज्यादातर मुहरे शैलखडी की बनी हुई हैं ।
- ज्यादातर मुहरे चौकोर हुआ करती थी ।
- मुहरे वस्तुओं की गुणवत्ता एवं व्यक्ति की पहचान की द्योतक होती थी ।
- (I) मुहरोँ पर एकशिंगा (एकशृंगी - सबसे ज्यादा)
- मोहनजोदड़ो व हडप्पा से बडी मात्रा में मुहरोँ प्राप्त होती हैं ।
- (II) कूबड वाला शांड के चित्र

## 1. हडप्पा: -

पाकिस्तान के पंजाब के मोंटगोमरी जिले मे स्थित (शुब - शाहीवाल जिले मे)  
रावी नदी के तट पर

- उत्खननकर्ता - दयाशम शाहनी
- रावी नदी के तट पर श्रमिको के श्रावश एवं श्रमनागार मिलते हैं ।
- R - 37 नामक कब्रिस्तान मिलता है । एक शव को ताबूत मे दफनाया गया है, इसे विदेशी की कब्र कहते हैं ।
- यहाँ से इक्का गाडी प्राप्त होती है । (पश्चिम मे विशाल दुर्ग)
- शृंगार पेटी प्राप्त होती है ।
- टीले पर निर्मित - व्हीलर ने "माउण्ट A - B" कहा ।

## 2. मोहनजोदड़ो : -

स्थिति = लस्काना (सिन्धु, PAK)

सिन्धु नदी के तट पर

उत्खननकर्ता = राखालदाश बनर्जी

- मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ = मृतकों का टीला (सिन्धी भाषा)

(i) विशाल रानानागार -

(a) आकार :- 39×23×8 ft

(b) इसके उत्तर व दक्षिण मे सीढियाँ बनी हुई हैं ।

(c) इसमें बिटुमिनश का लेप किया गया है ।

- (d) इसके उत्तर दिशा में 6 वस्त्र बदलने के कक्ष हैं।
- (e) तीन तरफ बरामदे हैं।
- (f) बरामदे के पीछे कई कक्ष बने हुए हैं।
- (g) जलापूर्ति हेतु कुँआ भी बना हुआ है।
- (h) शीशियों के शाक्ष्य भी मिलते हैं।
- (i) प्रथम तल पर सम्भवतया पुरोहित रहते होंगे।
- (j) सम्भवतया यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता रहा होगा ?
- (k) सर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत कहा है।

- (ii) विशाल श्रमनागर
- (iii) महाविद्यालय के शाक्ष्य
- (iv) सूती कपडे के शाक्ष्य
- (V) हाथी का कपालखण्ड
- (vi) नर्तकी की मूर्ति जो धातु की बनी हुई है।
  - (a) यह नग्न है।
  - (b) इसने एक हाथ में चूड़ियाँ पहन रखी हैं।
- (vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है।
  - (a) इसने शॉल ओढ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है।
- (viii) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है।

### 3. लोथल :-

स्थिति = गुजरात

- भोगवा नदी के किनारे
  - उत्खननकर्ता = S. R. शव (रंगनाथ शव)
  - यह एक व्यापारिक नगर था।
  - (i) यहाँ से गोदीवाडा (Dockyard) मिलता है।
    - (a) यह सिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बड़ी कृति है।
  - (ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना
  - (iii) चावल के शाक्ष्य
  - (iv) फार्श की मुहर जो गोलाकार बटननुमा है।
  - (v) घोडे की मृण्मूर्तियाँ
  - (vi) चक्की के दो पाट
  - (vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते हैं (एकमात्र)
  - (viii) छोटे दिशा सूचक यंत्र

4. शुक्रकोटडा / शुक्रकोटदा: -

स्थिति = गुजरात

(i) घोडे की हड्डियाँ

- सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो को घोडे का ज्ञान नहीं था ।

5. कुनाल (HR)

- चाँदी के दो मुकुट

6. रोजदी (गुजरात)

- हाथी के शाक्य

7. रोपड (PB)

मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के शाक्य

8. धौलावीरा

गुजरात - कच्छ जिला (किसी नदी तट पर नहीं)

उत्खननकर्ता - रविन्द्र सिंह विष्ट (1990 में)

- यह सबसे नवीन नगर है जिसका उत्खनन किया गया ।
- कृत्रिम जलाशय के शाक्य । संभवतः नहरों के माध्यम से खेती करते होंगे । (दुर्गाभाग, मध्यम नगर, निचला)
- यह नगर 3 भागों में बंटा हुआ था ।
- स्टेडियम एवं सूचना पट्ट के अवशेष मिलते हैं । (खेल का मैदान)
- सिन्धु लिपि के 10 बड़े चिह्नों से निर्मित शिलालेख

9. चन्हुदड़ों

उत्खननकर्ता - एन. मजूमदार (डाकूओं ने हत्या कर दी) - जर्नेस्ट मैके

- मनके बनाने के कारखाने (मणिकारी), मुहर बनाने का काम आदि ।
- श्रौद्योगिक नगर
- कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा करने के शाक्य मिले ।
- वक्राकार ईंट मिली है ।

10. दैमाबाद

- स्थ मिले हैं ।

हडप्पा लिपि

- लगभग 64 मूल चिह्न व 400 तक अवक्षर
- इन्हें लिपि का ज्ञान था

- दायीं से बायीं ओर लिखते थे ।
- गोमूत्राक्षर लिपि एवं भाव-चित्रात्मक लिपि थी ।
- 375 से 400 तक भाव एवं शब्दों का प्रयोग करते थे ।
- एक लेख पर सर्वाधिक 16 शब्द व भावों का प्रयोग किया गया है ।
- मछली का प्रयोग Max तथा "U" आकार भी अधिक

### पतन के कारण

- गार्डन चाइल्ड तथा व्हीलर के अनुशासक आर्यों का आक्रमण
- रंगनाथ राव तथा सर जॉन मार्शल - बाढ
- लोम्बार्डिक-सिंधु नदी का मार्ग बदलता
- आस्ट्राईन एवं कमलानंद घोष-जलवायु परिवर्तन
- जॉन मार्शल-प्रशासनिक शिथिलता

### निष्कर्ष

हडप्पा या सिंधुघाटी सभ्यता एक विशाल व विस्तृत सभ्यता थी, अतः इसके पतन के लिए कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं हो सकता है ।

प्राचीन अवशेषों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अपने अंतिम समय में यह पतनोन्मुख रही । अंततः द्वितीय सहस्राब्दी ई.पू. के मध्य इस सभ्यता का पूर्णतः विनाश हो गया । इस सभ्यता का क्रमिक पतन हुआ तथा यह नगरीय सभ्यता से ग्रामीण सभ्यता में पहुंच गयी ।

## वैदिक काल (साहित्य)

1500 - 600 BC

- |                      |   |               |
|----------------------|---|---------------|
| 1. वेद ⇒ श्रुति      | } | वैदिक साहित्य |
| 2. ब्राह्मण ⇒        |   |               |
| 3. श्राव्यक ⇒        |   |               |
| 4. उपनिषद् ⇒ वेदान्त |   |               |

- |                 |   |                               |
|-----------------|---|-------------------------------|
| (1) वेदांग      | } | वैदिक साहित्य का अंग नहीं है। |
| (2) धर्मशास्त्र |   |                               |
| (3) महाकाव्य    |   |                               |
| (4) पुराण       |   |                               |
| (5) स्मृतियाँ   |   |                               |

### वेद -

- वेद का शाब्दिक अर्थ ज्ञान होता है।
- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया।
- वेदों की रचना ऋषियों ने की।
- ऋषि का शाब्दिक अर्थ = श्रेष्ठ/कुलीन
- वेदों का नित्य, प्रामाणिक एवं अपौरुषेय माना जाता है।
- वैदिक मंत्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को दृष्टा कहते हैं।
- वैदिक मंत्रों की रचना करने वाली महिलाओं को ऋषि कहा जाता था।
- वेद 4 हैं -

### 1. ऋग्वेद -

- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 श्लोक, 10580(10600) मंत्र हैं।
- पहला एवं 10वाँ मण्डल बाद में जोड़े गए हैं।
- दूसरे से लेकर सातवें मण्डल को वंश मण्डल /परिवार मण्डल कहा जाता है।
- तीसरे मण्डल में गायत्री मंत्र का उल्लेख मिलता है।
  - गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की।
  - गायत्री मंत्र शवितृ / शवितृ (सूर्य) को समर्पित है।
- सातवें मण्डल में दशरज्ञ/ दशराजन युद्ध का उल्लेख मिलता है।
  - भरत कबीला V/S 10 कबीले
  - राजा = शुदास
  - पुरोहित = वशिष्ठ पुरोहित = विश्वामित्र
- यह युद्ध रावी नदी के जल के लिए लड़ा गया था।

- झाठवें मण्डल में घोशा, शिकता, झपाला, विश्वरा, काक्षावृति, लोपामुद्रा जैसी ऋषि महिलाओं के नाम मिलते हैं ।
- 9वां मण्डल रोम को समर्पित है ।
- रोम भुजवन्त पर्वत से मिलता है ।
- 10वें मण्डल के पुरुष सूक्त में शुद्ध शब्द का उल्लेख / चारों वर्ण का उल्लेख मिलता है ।
- 10वें मण्डल के नाशदीय सूक्त में निर्गुण भक्ति का उल्लेख मिलता है ।
- ऋग्वेद के मन्त्रों को उच्चारण करने वाला ब्राह्मण = होतृ
- उपवेद = आयुर्वेद

## 2. यजुर्वेद :-

- यह 2 भागों में है - (i) शुक्ल यजुर्वेद  
(ii) कृष्ण यजुर्वेद
- यह गद्य एवं पद्य दोनों में है ।
- इसमें शून्य का उल्लेख मिलता है ।
- मंत्र पढ़ने वाले को "ऋध्वर्यु" कहा जाता है ।
- यज्ञ - अनुष्ठानों की जानकारी मिलती है ।
- उपवेद - धनुर्वेद

## 3. सामवेद : -

- संगीत का प्राचीनतम स्रोत
- वैदिक मन्त्रों के उच्चारण को बताया गया है जो उच्च स्वर में गाए जाते हैं ।
- भगवान कृष्ण का प्रिय वेद
- मन्त्रों का उच्चारण करने वाला = उद्गाता
- उपवेद = मन्धर्ववेद

## 4. अथर्ववेद :-

- अथर्व ऋषि तथा अंगीरश ऋषि - रचयिता
- अन्य नाम - अथर्वअंगीरश वेद
- इसमें काले जादू, टोने - टोटको व चिकित्सा का उल्लेख ।
- चाँदी का उल्लेख
- विविध विषय - औषधि प्रयोग, शत्रुओं का दमन, रोग निवारण, तंत्र - मंत्र आदि ।
- मन्त्रों का उच्चारण करने वाला - ब्रह्म
- उपवेद - शिल्पवेद ।

## ब्राह्मण साहित्य

- ऋग्वेद - 1. ऐतरेय ब्राह्मण  
2. कौषीतकी (Raj. Board में इसे यजुर्वेद का ब्राह्मण)

- यजुर्वेद - 1. शतपथ ब्राह्मण  
2. तैत्तिरीय ब्राह्मण

- शामवेद - 1. पंचवीश ब्राह्मण  
2. षडवीश ब्राह्मण  
3. जैमिनीय ब्राह्मण

- ऋथर्ववेद 1. गोपथ ब्राह्मण

### शास्त्रिक साहित्य -

- वनों में रचना हुई
- रहस्यात्मक एवं दार्शनिक रूप (ज्ञान) में लिखे गये।
- ज्ञान मार्ग प्रमुख

### उपनिषद् साहित्य -

- इनकी संख्या 108 हैं।
- इसे वेदान्त भी कहा जाता है।
- उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ गुरु के समीप निष्ठापूर्वक बैठना है।
- विषयवस्तु - रहस्यात्मक ज्ञान व दार्शनिक तत्व

### प्रमुख उपनिषद् -

1. कठोपनिषद् = कठ + उपनिषद् → इसमें यम व नयिकेता का संवाद है इसमें कर्मकाण्ड की आलोचना की गई है।
2. छान्दोग्य उपनिषद् -
  - इसमें भगवान् कृष्ण का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है।
  - भगवान् श्रीकृष्ण को देवकी का पुत्र तथा अंगीरस ऋषि का शिष्य बताया है।
  - बौद्ध धर्म का पंचशील सिद्धान्त इसमें मिलता है।
3. वृहदारण्यक उपनिषद् -
  - सबसे लम्बा उपनिषद्
  - इसमें मार्गी व याज्ञवल्क्य का संवाद मिलता है।



4. जाबाल उपनिषद् -

- चारों क्षात्रों का उल्लेख मिलता है ।

5. ऐतरेय उपनिषद् -

बौद्ध धर्म का अष्टांगिक मार्ग

6. मुण्डकोपनिषद् -

“सत्यमेव जयते”

वेद कर्म मार्ग - जैमिनि पूर्व मीमांसा दर्शन  
ब्राह्मण प्रभाकर व कुमारिल भट्ट

शास्त्रिक ज्ञान मार्ग - बादरायण - उत्तर मीमांसा दर्शन  
उपनिषद् ब्रह्मसूत्र

- शंकराचार्य - अद्वैत
- रामानुज - विशिष्ट अद्वैत
- निर्म्बकाचार्य - द्वैत - अद्वैत
- वल्लभाचार्य - शुद्ध अद्वैत
- माधवाचार्य - द्वैत

वेदांग

1. शिक्षा
2. ज्योतिष
3. व्याकरण
4. छन्द
5. निरुक्त
6. कल्प

शुल्वसूत्र

- इसमें यज्ञ वेदिकाओं को नापने का उल्लेख
- गणित व रेखागणित का प्रथम ग्रन्थ

पुराण - संख्या - 18

ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र अश्रवा ने संकलित किया ।

- मत्स्य पुराण - सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक  
इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख
- विष्णु पुराण - मौर्य वंश का उल्लेख